2) polliceri. N. 3.9.: करिष्य इति संश्रुत्य· — *Caus.* facere ut quis audiat, narrare, *c.* 2. *acc.* MAH. 5.560.: उपाख्यानम् इदम्... संश्रावयामि त्वाम्·

2. श्रु 1. P. *vid.* स्रु·

श्रुति *f.* (r. श्रु s. ति) 1) auditio. IN. 2.5. BR. 2.16. 2) sensus audiendi. 3) auditum, traditum, *praesertim e scriptis sacris.* BH. 2.53.

श्रुतिमत् (a praec. s. मत्) auditu praeditus. BH. 13.13.

श्रुव *n.* cochlear sacrificum.

श्रेणि *f.* (ut videtur, a r. श्रि suff. *unâd.* नि) linea. MEGH. 22.29.36.

श्रेयस् (ut mihi videtur, a श्रील vel श्रीमत् felix, cum *gunâ* vocalis ई, abjecto suffixo ल vel मत्, suff. यस् pro ईयस्, v. gr. min. ed. 2. §. 226. 3) et 227.; ita superl. श्रेष्ठ e श्रे + ष्ठ pro इष्ठ) 1) *Adj.* melior. BR. 1.35. 2) *Subst. n.* salus, felicitas. IN. 3.7. N. 12.89. BH. 3.8.

श्रेष्ठ (v. praec.) optimus. IN. 5.17.

श्रै 1. P. *i. q.* श्रा· (Vid. gr. min. 354.)

श्रोण् 1. P. (सङ्घाते) coacervare. *Cf.* श्लोण्· (Vid. श्रोणि et cf. anglo-sax. *hlaw, hlæw* «a heap, barrow, a small hill»; goth. *hlain* collis. Vid. sq. et नितम्ब·)

श्रोणि *f.* (ut videtur, a r. श्रोण् s. इ) nates, clunes. N. 11.32. Lass. 50.17.: पीनश्रोणिपयोधरा· Vid. sq. (Cf. lat. *clûnis*, gr. κλόνις, hib. *slias* «the thigh, the loins». Vid. श्रोण्·)

श्रोणी *f. id.* H. 3.5. IN. 4.6.5.5. GITA-G. 12.11. MEGH. 80.: श्रोणीभाराद् अलसगमना (cf. UR. 60.15.: पश्चान् नता गुरुनितम्बतया)· — सुश्रोणी καλλίπυγος. IN. 4.6. *Vid.* श्रोणि·

श्रोतस् v. स्रोतस्·

श्रोतृ *m.* (r. श्रु s. तृ) auditor, auscultator. HIT. 70.3.

श्रोत्र *n.* (r. श्रु s. त्र) auris.

श्रोत्रिय *m.* (a श्रोत्र sensu *Vêdorum*, v. श्रुति, suff. इय) *Vêdorum* gnarus *Brâhmanus*. HIT. 123.16.

श्लक्ष्ण tenuis, mollis, lenis, suavis. N. 5.6.8.12.19.1.

श्लङ्क् 1. A. *i. q.* श्रङ्क्·

श्लङ्ग् *id. Vid.* श्रङ्ग्·

1. श्लथ् 1. P. *i. q.* 2. श्रथ्·

2. श्लथ् 10. P. *i. q.* 3. श्रथ्·

श्लथ (r. 2. श्लथ् s. अ) laxus, relaxus, solutus. RAGH. 9.36.

श्लाख् 1. P. *i. q.* शाख्·

श्लाघ् 1. A. (fortasse e श्राव् Them. Caus. r. श्रु, mutato र in ल् sicut in श्लथ् = श्रथ्, व् in घ्, v. gr. comp. 19. et cf. Pott I. 233.) 1) superbire, se jactare, gloriari *aliquâ re, c. instr.* MAH. 2.2121.: परेषाम् एव यशसा श्लाघसे त्वं सदा; 4.1160.: त्वया परिषदो मध्ये श्लाघते सः· 2) *c. dat.* adulare, blandiri. BHATT. 8.72.: श्लाघमानः परस्त्रीभ्यः· — *Caus.* laudare. HIT. 61.6.: तद्वाक्यं श्लाघयित्वा· (Cf. hib. *sleigh* «adoration», *sleachd* id., *sleachdaim* «I kneel, stoop, adore».)

श्लाघा *f.* (r. श्लाघ s. आ) laus. UR. 60.1.

1. श्लिष् 1. P. *i. q.* श्रिष्·

2. श्लिष् 4. P. *Praeter. multifor.* अश्लिक्षम् et अश्लिषम्· 1) amplecti. GITA-GOV. 1.44.: श्लिष्यति काम् अपि चुम्बति काम् अपि· 2) applicare, adjungere, conjungere. SAK. 62.1.: ना ’तिश्लिष्टः सन्धिर् अस्य मृणालवलयस्य; HIT. 24.5.: सुश्लिष्टेन सन्धिना· (Fortasse श्लिष् e श्लुष्, debilitato *u* in *i*; cf. germ. vet. *SLU-Z* claudere, lat. *clau-do, clav-is,* gr. κλείω, κλεί-ς, κλει-δός, κλοι-ός; hib. *crios* «belt, girdle, cingle, band».)

c. आ 1) amplecti. A. 4.6.: माम्... आश्लिष्य च पुनः पुनः; 9.16.: इतरेतरम् आश्लिष्य· — ATM. MAH. 1.3040.: पितुर् आश्लिष्यते ऽङ्गानि· 2) appropinquare. A. 6.12.: पुरम् आसुरम् आश्लिष्य· Se applicare. R. Schl. II. 96.22.: सीता ... वित्रस्ता रामम् आश्लिषत्·

c. आ praef. सम् 1) amplecti. MAH. 3.10043.: समाश्लिष्य च ’सकृद् ऋष्यशृङ्गम्· 2) applicâre, admovere. A. 6.8.: रथन् तन् तु समाश्लिष्य·

c. सम् amplecti, applicare, conjungere, *c. instr.* उरसा pressare *aliquem* ad pectus. R. Schl. I. 10.28.: ताव्